रविवार 17 मई, 2020

विषय — नश्वर और अमर

स्वर्ण पाठ: 1 कुरिन्थियों 15 : 10

"मैं जो कुछ भी हूं, परमेश्वर के अनुग्रह से हूं: और उसका अनुग्रह जो मुझ पर हुआ।"

उत्तरदायी अध्ययन: रोमियो **6 : 1, 2, 11, 13, 14, 22**

1 सो हम क्या कहें? क्या हम पाप करते रहें, कि अनुग्रह बहुत हो?
2 कदापि नहीं, हम जब पाप के लिये मर गए तो फिर आगे को उस में क्योंकर जीवन बिताएं?
11 ऐसे ही तुम भी अपने आप को पाप के लिये तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिये मसीह यीशु में जीवित समझो।
13 और न अपने अंगो को अधर्म के हथियार होने के लिये पाप को सौंपो, पर अपने आप को मरे हुओं में से जी उठा हुआ जानकर परमेश्वर को सौंपो, और अपने अंगो को धर्म के हथियार होने के लिये परमेश्वर को सौंपो।
14 और तुम पर पाप की प्रभुता न होगी, क्योंकि तुम व्यवस्था के आधीन नहीं वरन अनुग्रह के आधीन हो॥
22 परन्तु अब पाप से स्वतंत्र होकर और परमेश्वर के दास बनकर तुम को फल मिला जिस से पवित्रता प्राप्त होती है, और उसका अन्त अनन्त जीवन है।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. व्यवस्थाविवरण 30 : 6

6 और तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे और तेरे वंश के मन का खतना करेगा, कि तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन और सारे प्राण के साथ प्रेम करे, जिस से तू जीवित रहे।

2. भजन संहिता 49 : 1-3, 6, 7, 9

1 हेदेश देश के सब लोगों यह सुनो! हे संसार के सब निवासियों, कान लगाओ!
2 क्या ऊंच, क्या नीच क्या धनी, क्या दरिद्र, कान लगाओ!
3 मेरे मुंह से बुद्धि की बातें निकलेंगी; और मेरे हृदय की बातें समझ की होंगी।
6 जो अपनी सम्पत्ति पर भरोसा रखते, और अपने धन की बहुतायत पर फूलते हैं,
7 उन में से कोई अपने भाई को किसी भांति छुड़ा नहीं सकता है; और न परमेश्वर को उसकी सन्ती प्रायश्चित्त में कुछ दे सकता है,
9 कोई ऐसा नहीं जो सदैव जीवित रहे, और कब्र को न देखे॥

3. यहेजकेल 3 : 12, 14, 16, 17, 19, 21

12 तब आत्मा ने मुझे उठाया, और मैं ने अपने पीछे बड़ी घड़घड़ाहट के साथ एक शब्द सुना, कि यहोवा के भवन से उसका तेज धन्य है।
14 सो आत्मा मुझे उठा कर ले गई, और मैं कठिन दु:ख से भरा हुआ, और मन में जलता हुआ चला गया; और यहोवा की शक्ति मुझ में प्रबल थी;
16 सात दिन के व्यतीत होने पर यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुंचा,
17 हे मनुष्य के सन्तान मैं ने तुझे इस्राएल के घराने के लिये पहरुआ नियुक्त किया है; तू मेरे मुंह की बात सुन कर, उन्हें मेरी ओर से चिताना।
19 पर यदि तू दुष्ट को चिताए, और वह अपनी दुष्टता ओर दुष्ट मार्ग से न फिरे, तो वह तो अपने अधर्म में फंसा हुआ मर जाएगा; परन्तु तू अपने प्राणों को बचाएगा।
21 परन्तु यदि तू धर्मी को ऐसा कह कर चिताए, कि वह पाप न करे, और वह पाप से बच जाए, तो वह चितौनी को ग्रहण करने के कारण निश्चय जीवित रहेगा, और तू अपने प्राण को बचाएगा।

4. मत्ती 23 : 1-14

1 तब यीशु ने भीड़ से और अपने चेलों से कहा।
2 शास्त्री और फरीसी मूसा की गद्दी पर बैठे हैं।
3 इसलिये वे तुम से जो कुछ कहें वह करना, और मानना; परन्तु उन के से काम मत करना; क्योंकि वे कहते तो हैं पर करते नहीं।
4 वे एक ऐसे भारी बोझ को जिन को उठाना कठिन है, बान्धकर उन्हें मनुष्यों के कन्धों पर रखते हैं; परन्तु आप उन्हें अपनी उंगली से भी सरकाना नहीं चाहते।

5 वे अपने सब काम लोगों को दिखाने के लिये करते हैं: वे अपने तावीजों को चौड़े करते, और अपने वस्त्रों
की को रें बढ़ाते हैं।
6 जेवनारों में मुख्य मुख्य जगहें, और सभा में मुख्य मुख्य आसन।
7 और बाजारों में नमस्कार और मनुष्य में रब्बी कहलाना उन्हें भाता है।
8 परन्तु, तुम रब्बी न कहलाना; क्योंकि तुम्हारा एक ही गुरू है: और तुम सब भाई हो।
9 और पृथ्वी पर किसी को अपना पिता न कहना, क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है, जो स्वर्ग में है।
10 और स्वामी भी न कहलाना, क्योंकि तुम्हारा एक ही स्वामी है, अर्थात मसीह।
11 जो तुम में बड़ा हो, वह तुम्हारा सेवक बने।
12 जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा: और जो कोई अपने आप को छोटा
बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा॥
13 हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों तुम पर हाय! तुम मनुष्यों के विरोध में स्वर्ग के राज्य का द्वार बन्द करते
हो, न तो आप ही उस में प्रवेश करते हो और न उस में प्रवेश करने वालों को प्रवेश करने देते हो॥
14 हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों तुम पर हाय! क्योंकि तुम विधवाओं के घरों को खा जाते हो, और
दिखावा करने के लिए लंबी प्रार्थना करते हो: इसलिए तुम्हें बड़ा नुकसान मिलेगा।

5. मत्ती 21 : 31 (सच)

31 मैं तुम से सच कहता हूं, कि महसूल लेने वाले और वेश्या तुम से पहिले परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते
हैं।

6. मत्ती 5 : 1, 2, 8, 17-20

1 वह इस भीड़ को देखकर, पहाड़ पर चढ़ गया; और जब बैठ गया तो उसके चेले उसके पास आए।
2 और वह अपना मुंह खोलकर उन्हें यह उपदेश देने लगा,
8 धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।
17 यह न समझो, कि मैं व्यवस्था था भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूं: लोप करने
नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूं।
18 क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं, कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएं, तब तक व्यवस्था
से एक मात्रा या बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा।
19 इसलिये जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़े, और वैसा ही लोगों को
सिखाए, वह स्वर्ग के राज्य में सब से छोटा कहलाएगा; परन्तु जो कोई उन का पालन करेगा और उन्हें
सिखाएगा, वही स्वर्ग के राज्य में महान कहलाएगा।

20 क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि यदि तुम्हारी धामिर्कता शास्त्रियों और फरीसियों की धामिर्कता से बढ़कर न हो, तो तुम स्वर्ग के राज्य में कभी प्रवेश करने न पाओगे॥

7. इफिसियों 2 : 4-10

4 परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है; अपने उस बड़े प्रेम के कारण, जिस से उस ने हम से प्रेम किया।
5 जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे, तो हमें मसीह के साथ जिलाया; (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है।)
6 और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया।
7 कि वह अपनी उस कृपा से जो मसीह यीशु में हम पर है, आने वाले समयों में अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाए।
8 क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है।
9 और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।
10 क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिये तैयार किया॥

8. प्रकाशित वाक्य 2 : 1 (इन) (*से*,), 2, 3, 7

1 जो सातों तारे अपने दाहिने हाथ में लिए हुए है वह यह कहता है कि
2 मै तेरे काम, और परिश्रम, और तेरा धीरज जानता हूं; और यह भी, कि तू बुरे लोगों को तो देख नहीं सकता; और जो अपने आप को प्रेरित कहते हैं, और हैं नहीं, उन्हें तू ने परख कर झूठा पाया।
3 और तू धीरज धरता है, और मेरे नाम के लिये दु: ख उठाते उठाते थका नहीं।
7 जिस के कान हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है: जो जय पाए, मैं उसे उस जीवन के पेड़ में से जो परमेश्वर के स्वर्गलोक में है, फल खाने को दूंगा॥

9. प्रकाशित वाक्य 22 : 14

14 धन्य वे हैं, जो अपने वस्त्र धो लेते हैं, क्योंकि उन्हें जीवन के पेड़ के पास आने का अधिकार मिलेगा, और वे फाटकों से हो कर नगर में प्रवेश करेंगे।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 76 : 20 (मनुष्य है)-21

… मनुष्य अमर है और दिव्य अधिकार से जीवित है।

2. 492 : 7-12

पवित्र होना, समरसता, अमरता है। यह पहले से ही साबित हो गया है कि इस का ज्ञान, यहां तक कि छोटी सी डिग्री में, नश्वर लोगों के भौतिक और नैतिक स्तर को ऊपर उठाएगा, दीर्घायु को बढ़ाएगा, चरित्र को शुद्ध और ऊंचा करेगा। इस प्रकार प्रगति अंततः सभी त्रुटि को नष्ट कर देगी, और अमरता को प्रकाश में लाएगी।

3. 539 : 3-7, 10-13

जीवन को आत्मा से अलग मानकर त्रुटि शुरू होती है, इस प्रकार अमरता की नींव को गिराना, जैसे कि जीवन और अमरता एक ऐसी चीज थी जो कुछ भी दे सकती है और ले सकती है।

परमेश्वर कभी भी बुराई का तत्व नहीं दे सकता है, और मनुष्य के पास कुछ भी नहीं है जो उसने परमेश्वर से प्राप्त नहीं किया है। फिर मनुष्य को अधर्म का आधार कैसे बनाया गया है?

4. 327 : 9-21

बुराई कभी-कभी किसी व्यक्ति के अधिकार की सबसे बड़ी अवधारणा होती है, जब तक कि अच्छाई पर उसकी पकड़ मजबूत नहीं हो जाती। तब वह दुष्टता में आनंद खो देता है, और यह उसकी पीड़ा बन जाती है। पाप के दुख से बचने का तरीका है, पाप को रोकना। और कोई रास्ता नहीं है। पाप जानवर की छवि है जो पीड़ा के पसीने से बह जाता है। यह एक नैतिक पागलपन है जो आधी रात और तड़के के साथ घूमने के लिए आगे बढ़ता है।

भौतिक इंद्रियों के लिए, क्रिश्चियन साइंस की सख्त मांगें दुरी लगती हैं; लेकिन नश्वर यह जानने के लिए जल्दबाजी कर रहे हैं कि जीवन ईश्वर है, अच्छा है, और उस बुराई का वास्तविकता में कोई स्थान नहीं है और न ही मानव या ईश्वरीय अर्थव्यवस्था में शक्ति है।

5. 67 : 18-24

यह धारणा कि जानवर के चरित्र संभवतः बल दे सकते हैं, विचार के लिए बहुत ही बेतुका है जब हम याद करते हैं कि आध्यात्मिक महत्व के माध्यम से हमारे भगवान और गुरु ने बीमारों को चंगा किया, मृतकों को उठाया, और हवाओं और लहरों को भी उसे मानने की आज्ञा दी। अनुग्रह और सत्य अन्य सभी साधनों और विधियों से अधिक शक्तिशाली हैं।

6. 328 : 4-13

मनुष्यों का मानना है कि वे अच्छाई के बिना रह सकते हैं, जब भगवान अच्छा है और एकमात्र वास्तविक जीवन है। इसका परिणाम क्या है? दिव्य सिद्धांत के बारे में बहुत कम समझना जो बचाता है और ठीक करता है, नश्वर पाप, बीमारी, और मृत्यु से केवल विश्वास में छुटकारा पाते हैं। इन त्रुटियों को वास्तव में नष्ट नहीं किया जाता है, और इसलिए जब तक, यहाँ या उसके बाद नश्वर लोगों से चिपके रहना चाहिए, वे विज्ञान में भगवान की सच्ची समझ हासिल करते हैं जो उसके बारे में मानव भ्रम को नष्ट कर देता है और उसकी सहयोगीता की भव्य वास्तविकताओं को प्रकट करता है।

7. 476 : 9-20

ईश्वर मनुष्य का सिद्धांत है, और मनुष्य ईश्वर का विचार है। इसलिए मनुष्य न तो नश्वर है और न ही भौतिक। नश्वर गायब हो जाएंगे, और अमर होंगे, या भगवान की संतान, मनुष्य के एकमात्र और अनन्त सत्य के रूप में दिखाई देंगे। मुर्दा भगवान के बच्चे नहीं हैं। उनके पास कभी भी पूर्ण राज्य नहीं था, जिसे बाद में फिर से हासिल किया जा सकता है। वे नश्वर इतिहास की शुरुआत से थे, "पाप में कल्पना की और अधर्म में माता के गर्भ में लाया।" मृत्यु दर अंततः अमरता में निगल जाती है। पाप, बीमारी, और मृत्यु को उन तथ्यों को जगह देनी होगी जो अमर आदमी के हैं।

8. 339 : 20 (जैसा)-32

जैसा कि मूर्तिपूजक रोम की पौराणिक कथाओं में देवता के एक अधिक आध्यात्मिक विचार की उपज है, तो क्या हमारे भौतिक सिद्धांत आध्यात्मिक विचारों तक उपजेंगे, जब तक परिमित अनंत, बीमारी को स्वास्थ्य नहीं देता, पवित्रता को पाप, और परमेश्वर का राज्य आता है , "जैसा कि यह स्वर्ग में है।" सभी स्वास्थ्य, पापहीनता, और अमरता का आधार महान तथ्य यह है कि भगवान केवल मन है; और इस मन को केवल विश्वास नहीं होना चाहिए, लेकिन इसे समझना चाहिए। विज्ञान के माध्यम से पाप से छुटकारा पाने के लिए, किसी भी मन या वास्तविकता के पाप को विभाजित करना है, और यह स्वीकार नहीं करना है कि पाप में बुद्धि या शक्ति, दर्द या खुशी हो सकती है। आप इसकी सत्यता को नकार कर त्रुटि पर विजय प्राप्त करते हैं।

9. 103 : 6-17, 25-32

विज्ञान के माध्यम से नश्वर मन के दावों का विनाश, जिससे मनुष्य पाप और मृत्यु दर से बच सकता है, पूरे मानव परिवार को आशीर्वाद देता है। हालांकि, शुरुआत में, यह मुक्ति वैज्ञानिक रूप से खुद को अच्छे और बुरे दोनों के ज्ञान में नहीं दिखाती है, क्योंकि बाद वाला असत्य है।

दूसरी ओर, माइंड-साइंस किसी भी आधे-अधूरे ज्ञान से अलग है, क्योंकि माइंड-साइंस ईश्वर का है और ईश्वरीय सिद्धांत को प्रदर्शित करता है, केवल अच्छे उद्देश्यों को पूरा करता है। अधिकतम अच्छाई अनंत भगवान और उनके विचार, सभी में है। बुराई एक झूठ है।

और वे नश्वर मन की दंतकथाओं का सत्यानाश करते हैं, जिनकी भड़कीली और भड़कीली दिखावा, मूर्खतापूर्ण पतंगों की तरह, अपने स्वयं के पंख गाते हैं और धूल में गिर जाते हैं।

वास्तव में कोई नश्वर मन नहीं है, और परिणामस्वरूप नश्वर विचार और इच्छा-शक्ति का कोई संक्रमण नहीं है। जीवन और अस्तित्व ईश्वर के हैं।

10. 276 : 12-24

यह अहसास कि सभी धर्म असत्य हैं, वस्तुओं और विचारों को अपने वास्तविक प्रकाश में मानवीय दृष्टिकोण में लाता है, और उन्हें सुंदर और अमर के रूप में प्रस्तुत करता है। मनुष्य में सद्भाव उतना ही वास्तविक और अमर है जितना संगीत में। त्याग असत्य और नश्वर है।

यदि परमेश्वर को केवल मन और जीवन माना जाता है, तो पाप और मृत्यु के लिए कोई अवसर होना बंद हो जाता है। जब हम विज्ञान में सीखते हैं कि स्वर्ग में हमारे पिता भी कैसे परिपूर्ण हैं, तो विचार को नए और स्वस्थ चैनलों में बदल दिया गया है, - सामंजस्यपूर्ण मनुष्य सहित ब्रह्मांड के सिद्धांत के लिए अमरता और भौतिकता से दूर चीजों के चिंतन की ओर।

11. 324 : 4-18

भाव और आत्म की शुद्धि ही प्रगति का प्रमाण है। “धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।”

जब तक मनुष्य की सामंजस्य और अमरता अधिक स्पष्ट नहीं होती, हम परमेश्वर के सच्चे विचार को प्राप्त नहीं कर रहे हैं; और शरीर प्रतिबिंबित करेगा कि यह क्या नियंत्रित करता है, चाहे वह सत्य हो या त्रुटि, समझ या विश्वास, आत्मा या मामला। इसलिए "अब उसके साथ परिचित हो जाओ, और शांति से रहो।" चौकस, शांत और सतर्क रहें। जिस मार्ग से यह समझ पैदा होती है कि ईश्वर ही एकमात्र जीवन है, सीधा और संकीर्ण है। यह मांस के साथ एक युद्ध है, जिसमें हमें पाप, बीमारी, और मृत्यु पर विजय प्राप्त करनी चाहिए, या तो इसके बाद, या - निश्चित रूप से इससे पहले कि हम आत्मा के लक्ष्य तक पहुँच सकें, या परमेश्वर में जीवन पा सकें।

12. 311 : 22-25

जब मानवता इस विज्ञान को समझती है, तो यह मनुष्य के लिए जीवन का नियम बन जाएगा, - यहां तक कि आत्मा का उच्च नियम, जो सद्भाव और अमरता के माध्यम से भौतिक अर्थों पर हावी है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6